قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ

उन सरदारों ने कहा जो बड़ाई तलब करते थे आप की क़ौम में से के ऐ शुऐब।

يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ

हम तुम्हें और उन लोगों को भी जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे,

اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾ قف

मगर ये के तुम हमारे मज़हब में लौट आओ। शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या अगर्चे हम नापसन्द करते हों?

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ

तब तो हम ने अल्लाह पर झूठ बोला अगर हम तुम्हारे मज़हब में लौट जाएं

بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ

इस के बाद के अल्लाह ने हमें उस से नजात दी। और हमारे लिए जाइज़ नहीं है के हम उस में लौट

فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ

जाएं मगर ये के हमारा रब अल्लाह चाहे। हमारा रब इल्म के ऐतेबार से

شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا

हर चीज़ पर वसीअ है। अल्लाह ही पर हम ने तवक्कुल किया। ऐ हमारे रब! तू हमारे दरमियान और हमारी क़ौम

وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ

के दरमियान इन्साफ के साथ फैसला कर दे और तू सब से अच्छा फैसला करने वाला है। और उन

الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا

सरदारों ने कहा जो काफिर थे आप की क़ौम में से के अगर तुम ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) का इत्तिबा किया

اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا

तो यक़ीनन तुम नुकसान उठाने वाले बन जाओगे। फिर उन्हें ज़लज़ले ने पकड़ लिया, फिर वो अपने

فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا

घरों में घुटने के बल पड़े रेह गए। वो लोग जिन्हों ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۛۚ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا

गोया वो उस में बसे ही नहीं थे। वो लोग जिन्हों ने शुऐब (अलैहिस्सलाम) को झुठलाया वही

هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ

खसारा उठाने वाले बन बए। फिर शुऐब (अलैहिस्सलाम) ने उन से मुंह फेर लिया और फरमाया के ऐ कौम!

ع

اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَ نَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى

यक़ीनन मैं ने तुम्हें अपने रब के पैग़ामात पहोंचाए और मैं ने तुम्हारी खैरख्वाही की। फिर मैं कैसे अफसोस

عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ ع

करूँ काफिर क़ौम पर? और किसी बस्ती में हम ने कोई नबी नहीं भेजा

اِلَّآ اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ

मगर हम ने वहां वालों को तकलीफ और सख्ती के ज़रिए पकड़ा, शायद वो

يَضَّرَّعُوْنَ ﴿٩٤﴾ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ

आजिज़ी करें। फिर हम ने बुराई के बदले में भलाई दी

حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ

यहां तक के वो खूब फूले फले और उन्हों ने कहा के हमारे बाप दादा को भी तकलीफ और खुशी पहोंची थी,

فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ

फिर अचानक हम ने उन को पकड़ लिया इस हाल में के उन्हें पता नहीं था। और अगर बस्तियों

الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ

वाले ईमान लाते और मुत्तक़ी बनते, तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की बरकात

مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ

खोल देते, लेकिन उन्हों ने झुठलाया, फिर हम ने उन को पकड़ लिया

بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾ اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ

उन आमाल की वजह से जो वो करते थे। क्या ये (मक्का की) बस्तियों वाले मामून हैं इस से के उन के पास

بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾ اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى

हमारा अज़ाब आ जाए रात के वक्त इस हाल में के वो सोए हुए हों? क्या ये बस्तियों वाले इस से

اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾ اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ

मामून हैं के उन के पास हमारा अज़ाब आ जाए चाश्त के वक्त इस हाल में के वो खेल रहे हों? क्या फिर वो

اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾ ع

अल्लाह की तदबीर से अमन में हैं? फिर अल्लाह की तदबीर से अमन में नहीं रेहते मगर खसारा उठाने वाले लोग।

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْ ۢ بَعْدِ

क्या हिदायत का बाइस नहीं बनी उन लोगों के लिए जो इस ज़मीन के वारिस होते हैं यहां वालों के

أَهْلِهَآ أَنْ لَّوْ نَشَآءُ أَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ

बाद ये बात के अगर हम चाहते तो उन्हें मुसीबत पहोंचाते उन के गुनाहों की वजह से? और हम उन के दिलों पर

عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾ تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ

मुहर लगाते हैं, फिर वो सुन नहीं पाते। ये बस्तियाँ जिन के कुछ क़िस्से हम

عَلَيْكَ مِنْ أَنْۢبَآئِهَا ۚ وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

आप के सामने बयान करते हैं। यक़ीनन उन के पैग़म्बर उन के पास

بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ۗ

रोशन मोअजिज़ात ले कर आए। फिर वो ईमान नहीं लाते थे इस वजह से के वो उस से पेहले झुठला चुके थे।

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٠١﴾

इसी तरह अल्लाह काफिरों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ وَإِنْ وَّجَدْنَآ أَكْثَرَهُمْ

और हम ने उन में से अक्सर में वफाए अहद नहीं पाया। और यक़ीनन हम ने उन में से अक्सर को

لَفٰسِقِيْنَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ

नाफरमान पाया। फिर हम ने उन के बाद मूसा (अलैहिस्सलाम) को भेजा अपनी आयात दे कर

إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

फिरऔन और उस की जमाअत की तरफ, फिर उन्हों ने उन आयात के साथ जुल्म किया। फिर आप देखिए के फसाद फैलाने

عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٠٣﴾ وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ

वालों का अन्जाम कैसा हुवा। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया ऐ फिरऔन!

إِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٤﴾ حَقِيْقٌ عَلٰٓى أَنْ لَّآ أَقُوْلَ

यक़ीनन मैं रब्बुल आलमीन की तरफ से भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ। लाइक़ हूँ के मैं अल्लाह के

عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ ۗ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ

ज़िम्मे न कहूँ सिवाए हक़ बात के। यक़ीनन मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन मोअजिज़ात ले कर आया हूँ,

فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ ﴿١٠٥﴾ قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ

तो तू मेरे साथ बनी इस्राईल को जाने दे। फिरऔन ने कहा के अगर तू मोअजिज़ा

بِاٰيَةٍ فَأْتِ بِهَآ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَأَلْقٰى

लाया है, तो तू उस को पेश कर अगर तू सच्चों में से है। फिर मूसा (अलैहिस्सलाम) ने

عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٠٧﴾ وَّ نَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا

अपना असा डाला, तो अचानक वो खुला अजदहा बन गया। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपना हाथ गिरेबान से निकाला तो अचानक

هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ ١٣ ع ٣

वो देखने वालों के सामने रोशन हो गया। फिरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा के

اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٩﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ

यक़ीनन ये माहिर जादूगर है। ये चाहता है के तुम्हें तुम्हारे मुल्क

مِّنْ اَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿١١٠﴾ قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ

से निकाल दे। फिर तुम क्या मश्वरा देते हो? उन्हों ने कहा के उन को और उन के भाई को मोहलत दीजिए और

وَاَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿١١١﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ

शेहरों में जादूगरों को इकट्ठा करने वालों को भेज दीजिए। के वो आप के पास हर माहिर जादूगर को

عَلِيْمٍ ﴿١١٢﴾ وَ جَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا

ले आएं। और जादूगर फिरऔन के पास आ गए। उन्हों ने कहा के यक़ीनन हमारे लिए

لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ

उजरत होनी चाहिए अगर हम ग़ालिब हुए। फिरऔन ने कहा के जी हां! और यक़ीनन तुम

لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿١١٤﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ

मुक़र्रबीन में से कर दिए जाओगे। जादूगरों ने कहा ऐ मूसा! या आप डालोगे

اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿١١٥﴾ قَالَ اَلْقُوْا فَلَمَّآ اَلْقَوْا

या हम डालें? मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के तुम डालो। फिर जब उन्हों ने डाला

سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ

तो उन्हों ने लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हों ने उन को डराना चाहा और वो भारी जादू को ले कर

عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾ وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ

आए थे। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की के अपना असा डाल दीजिए।

فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ

तो अचानक वो निगलने लगा उन चीज़ों को जो वो झूठ बना कर लाए थे। फिर हक़ साबित हो गया और उन का अमल

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا

बातिल हो गया। वहाँ पर जादूगर मग़लूब हो गए, और वो ज़लील

صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾ قَالُوْٓا

हो गए। और जादूगर सजदे में गिर गए। और उन्हों ने

اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢١﴾ رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾

कहा के हम रब्बुल आलमीन पर ईमान ले आए। जो मूसा और हारून (अलैहिमस्सलाम) का रब है।

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ

फिरऔन ने कहा के तुम उस पर ईमान ले आए इस से पेहले के मैं तुम्हें इजाज़त दूँ?

اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ

यक़ीनन ये हीला है जो तुम ने इस शेहर में किया है ताके तुम इस शेहर से यहाँ वालों को

اَهْلَهَا فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ

निकाल दो। फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। मैं तुम्हारे हाथ और पैर

وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾

जानिबे मुखालिफ से काट दूंगा, फिर मैं तुम सब को सूली दूंगा।

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ

उन्हों ने कहा के यक़ीनन हम अपने रब ही के पास पलट कर जाएंगे। और हमारी तरफ से तुझे बुरी नहीं लगी

اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا رَبَّنَآ اَفْرِغْ

मगर ये बात के हम अपने रब की आयतों पर ईमान ले आए जब वो हमारे पास आईं। ऐ हमारे रब! हम

ع ١٤
عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ الْمَلَاُ

पर सब्र उंडेल दे और तू हमें मुसलमान होने की हालत में वफात दे। और फिरऔन की क़ौम के

مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا

सरदारों ने कहा के तुम छोड़ते हो मूसा और उस की क़ौम को ताके वो इस मुल्क में फसाद

فِي الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ

फैलाएं हालांके वो तुझे और तेरे माबूदों को छोड़ देता है। फिरऔन ने कहा अनक़रीब हम उन के बेटों को

وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ

क़त्ल कर देंगे और उन की औरतों को ज़िन्दा रेहने देंगे। और यक़ीनन हम उन पर ग़ालिब हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम)

مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا اِنَّ

ने अपनी क़ौम से फरमाया के तुम अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो।

الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ

ये ज़मीन अल्लाह की है, अल्लाह उस का वारिस उसे बनाते हैं जिसे चाहते हैं अपने बन्दों में से।

وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ

और अच्छा अन्जाम मुत्तक़ियों के लिए है। उन्हों ने कहा के हमें ईज़ा दी गई इस से पेहले के

اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۭ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ

आप हमारे पास आएं और इस के बाद भी के आप हमारे पास आए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के

اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ

हो सकता है के तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और तुम्हें इस मुल्क में जानशीन बनाए, फिर देखे

كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ع ١٥

तुम कैसे अमल करते हो। और यक़ीनन हम ने आले फिरऔन को पकड़ा

بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

क़हतसाली और फलों की कमी के ज़रिए ताके वो नसीहत हासिल करें।

فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ

फिर जब उन्हें खुशहाली पहोंचती, तो वो केहते के ये तो हमारा हक़ है।

وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ۭ

और अगर उन्हें मुसीबत पहोंचती तो वो बदफाली लेते मूसा (अलैहिस्सलाम) से और उन लोगों से जो मूसा (अलैहिस्सलाम) के साथ थे।

اَلَآ اِنَّمَا طٰۗىِٕرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

सुनो! उन ही की नहूसत अल्लाह के पास है, लेकिन उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ

जानते नहीं। और उन्हों ने कहा के जो मोअजिज़ा भी आप हमारे पास लाओगे

لِّتَسْحَرَنَا بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ فَاَرْسَلْنَا

ताके तुम उस के ज़रिए हम पर जादू करो, तब भी हम उसे मानने वाले नहीं हैं।

عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ

फिर हम ने उन पर भेजा तूफान और टिड्डी और जुएं और मैंडक

وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۣ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا

और खून तफसीलवार निशानियाँ। फिर उन्हों ने बड़ा बनना चाहा और वो मुजरिम

مُّجْرِمِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى
क़ौम थी। और जब उन पर अज़ाब वाकेअ हो चुका तो केहने लगे के ऐ मूसा!
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ
आप हमारे लिए अपने रब से दुआ कीजिए उस अहद की वजह से जो उस ने आप से कर रखा है। के अगर ये अज़ाब तू
عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ
हम से हटा देगा तो हम तुझ पर ईमान ले आएंगे और तेरे साथ बनी इस्राईल को भेज
اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۳۴﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ
देंगे। फिर जब हम ने उन से अज़ाब हटा दिया एक वक़्त तक जिस को
بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
वो पहोंचने वाले थे, तो अचानक वो अहदशिकनी करने लगे। फिर हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया, फिर हम ने उन्हें
فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ كَانُوْا عَنْهَا
गर्क़ किया समन्दर में इस वजह से के वो हमारी आयतों को झुठलाते थे और उन से
غٰفِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَ اَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ
ग़ाफिल थे। और हम ने वारिस बनाया उस क़ौम को जिस को कमज़ोर किया जा रहा था
مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِىْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ
ज़मीन के मशरिक़ व मग़रिब में उस ज़मीन का जिस में हम ने बरकतें रखी हैं।
وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ
और आप के रब के अच्छे कलिमात पूरे हो कर रहे बनी इस्राईल पर
بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَ دَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ
इस वजह से के उन्हों ने सब्र किया। और हम ने तबाह कर दिया उस को जिसे फिरऔन और उस की क़ौम
وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ
बना रही थी और उन इमारतों को जिन्हें वो ऊँचा बनाते थे। और हम ने बनी इस्राईल
اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ
को समन्दर पार करा दिया, फिर वो आए एक क़ौम पर जो अपने बुतों पर
عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا
जमे हुए थे। वो केहने लगे ऐ मूसा! आप हमारे लिए भी माबूद मुक़र्रर कर दीजिए जैसा के

لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٨﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ

उन के लिए माबूद हैं। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया यक़ीनन तुम ऐसी क़ौम हो जो जहालत की बातें करते हो। यक़ीनन ये

مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾

लोग जिस चीज़ (दीन) में लगे हैं वो तबाह होने वाला है और बातिल है वो काम जो वो कर रहे हैं।

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ

मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया क्या मैं अल्लाह के अलावा किसी को माबूद के तौर पर तुम्हारे लिए तलाश करूँ हालांके

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ

उस ने तुम्हें तमाम जहां वालों पर फज़ीलत दी है। और जब हम ने तुम्हें आले फिरऔन से नजात दी

يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ

जो तुम्हें बदतरीन सज़ा के ज़रिए तकलीफ देते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते थे

وَ يَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रेहने देते थे। और उस में तुम्हारे रब की

مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ﴿١٤١﴾ ع وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ ١٦ ع ١٢ ٢

तरफ से भारी इमतिहान था। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) से तीस रात का

لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ

वादा किया और हम ने उन को और दस रातों के ज़रिए पूरा किया, फिर आप के रब का मुक़र्रर किया हुवा वक्त चालीस

لَيْلَةً ۚ وَ قَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ

रातें पूरी हो गईं। और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने भाई हारून (अलैहिस्सलाम) से फरमाया के तुम

فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿١٤٢﴾

मेरे जानशीन बन कर रहो मेरी क़ौम में और इस्लाह करना और फसाद फैलाने वालों के रास्ते पर मत चलना।

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ

और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) आए हमारे वक्ते मुक़र्ररा पर और उन के रब ने उन से कलाम किया तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ

رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ

मेरे रब! आप मुझे दिखाइए के मैं आप की तरफ देखूं। अल्लाह ने फरमाया के आप हरगिज़ मुझे देख नहीं सकते, लेकिन आप

انْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ

निगाह कीजिए पहाड़ की तरफ, फिर अगर वो अपनी जगह पर ठेहरा रहे तो अनक़रीब आप

تَرٰىنِیْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰی رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّ خَرَّ

मुझे देखोगे। फिर जब मूसा (अलैहिस्सलाम) के रब ने पहाड़ पर तजल्ली फरमाई तो उसे रेज़ा रेज़ा कर दिया और मूसा

مُوْسٰی صَعِقًا ۚ فَلَمَّاۤ اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ

(अलैहिस्सलाम) बेहोश हो कर गिर गए। फिर जब होश में आए तो केहने लगे आप पाक हैं, मैं आप की

اِلَیْكَ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۱۴۳﴾ قَالَ یٰمُوْسٰۤی

तरफ तौबा करता हूँ और मैं सब से पेहले ईमान लाने वाला हूँ। अल्लाह ने फरमाया के ऐ मूसा!

اِنِّی اصْطَفَیْتُكَ عَلَی النَّاسِ بِرِسٰلٰتِیْ وَ بِكَلَامِیْ ۖ

मैं ने आप को मुमताज़ किया तमाम इन्सानों से अपने पैग़ामात दे कर और मेरी हमकलामी के ज़रिए।

فَخُذْ مَاۤ اٰتَیْتُكَ وَ كُنْ مِّنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَكَتَبْنَا لَهٗ

इस लिए आप लीजिए उसे जो मैं ने आप को दिया और आप शुक्रगुज़ारों में से रहिए। और हम ने उन्हें

فِی الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَیْءٍ مَّوْعِظَةً وَّ تَفْصِیْلًا

तखतियों में हर चीज़ की नसीहत और तफसील हर चीज़ की

لِّكُلِّ شَیْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ یَاْخُذُوْا

लिख कर दी थी। फिर तुम उस को मज़बूत पकड़ लो और अपनी क़ौम को हुक्म दो के उस के अच्छे अहकामात पर

بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِیْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِیْنَ ﴿۱۴۵﴾ سَاَصْرِفُ

अमल करें। अनक़रीब मैं तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊँगा। मैं अनक़रीब मेरी आयतों (के समझने)

عَنْ اٰیٰتِیَ الَّذِیْنَ یَتَكَبَّرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ ؕ

से हटा दूंगा उन को जो ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते हैं।

وَاِنْ یَّرَوْا كُلَّ اٰیَةٍ لَّا یُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ یَّرَوْا سَبِیْلَ

और अगर वो तमाम मोअजिज़ात भी देख लें तब भी वो ईमान न लावें। और अगर वो हिदायत के रास्ते

الرُّشْدِ لَا یَتَّخِذُوْهُ سَبِیْلًا ۚ وَاِنْ یَّرَوْا سَبِیْلَ الْغَیِّ

को देखें तो उस को रास्ता न बनावें। और अगर वो सरकशी के रास्ते को देखें

یَتَّخِذُوْهُ سَبِیْلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ كَانُوْا

तो उसे रास्ता बना लें। ये इस वजह से के उन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और वो

عَنْهَا غٰفِلِیْنَ ﴿۱۴۶﴾ وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا وَلِقَآءِ

उस से ग़ाफिल थे। और वो लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया और आखिरत के मिलने को

الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا
झुठलाया उन के आमाल हब्त हो गए। उन्हें सज़ा नहीं दी जाएगी मगर

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٤٧﴾ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ ع
उन्ही कामों की जो वो करते थे। और मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम ने उन के जाने के बाद

مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ
अपने ज़ेवरात से बछड़े का एक जिस्म बनाया जिस की बैल जैसी आवाज़ थी। क्या वो समझते नहीं थे के

لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا وقف لازم
वो उन से कलाम नहीं कर सकता और उन को रास्ता नहीं दिखा सकता? उन्हों ने उस को बना लिया इस हाल में के वो

ظٰلِمِيْنَ ﴿١٤٨﴾ وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ
शिर्क कर रहे थे। और जब वो नादिम हुए और उन्हों ने समझा के वो

قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا
गुमराह हो गए, तो उन्हों ने कहा के अगर हम पर हमारा रब रहम नहीं करेगा और हमारी मग़फिरत नहीं करेगा

لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿١٤٩﴾ وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى
तो हम ज़रूर खसारा उठाने वाले बन जाएंगे। और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) वापस लौटे

اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِىْ
अपनी क़ौम की तरफ गुस्से में अफसोस करते हुए, फरमाने लगे के तुम ने मेरे पीछे मेरे जाने के बाद

مِنْۢ بَعْدِىْ ۚ اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ
बुरी जानशीनी की। तुम ने अपने रब के हुक्म से जल्दी क्यूं की? और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने तख्तियों को डाला

وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ اُمَّ
और अपने भाई का सर पकड़ा, उस को अपनी तरफ खींच रहे थे। हारून (अलैहिस्सलाम) अर्ज़ करने लगे ऐ मेरी माँ

اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِىْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِىْ ۖ
के बेटे! यक़ीनन इस क़ौम ने मुझे कमज़ोर समझा और क़रीब थे के मुझे क़त्ल कर देते।

فَلَا تُشْمِتْ بِىَ الْاَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِىْ مَعَ الْقَوْمِ
इस लिए आप मुझ पर दुश्मनों को न हंसाइए और मुझे मुशरिक क़ौम के साथ

الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَلِاَخِىْ وَاَدْخِلْنَا
न कीजिए। मूसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा ऐ मेरे रब! मेरी और मेरे भाई की मग़फिरत फरमा और तू हमें

ع ١٨ ٨ فِىْ رَحْمَتِكَ ۖؗ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١٥١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

अपनी रहमत में दाखिल कर दे। और तू अरहमुर्राहिमीन है। यक़ीनन वो लोग

اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ

जिन्हों ने बछड़े को बनाया था, अनक़रीब उन्हें उन के रब की तरफ से गज़ब पहोंचेगा और दुन्यवी

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُفْتَرِيْنَ ﴿١٥٢﴾

ज़िन्दगी में ज़िल्लत पहोंचेगी। और इसी तरह हम झूठ गढ़ने वालों को सज़ा देते हैं।

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ز

और वो लोग जिन्हों ने बुरे काम किए, फिर उस के बाद तौबा की और ईमान लाए।

اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٥٣﴾ وَلَمَّا سَكَتَ

यक़ीनन तेरा रब उस के बाद अलबत्ता बख्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है। और जब मूसा

عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَفِىْ نُسْخَتِهَا

(अलैहिस्सलाम) का गुस्सा ठन्डा हो गया तो आप ने तख्तियों को लिया। और उस के मज़मून में

هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾

हिदायत और रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं।

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को हमारे वक्ते मुक़र्ररा के लिए मुन्तखब किया।

فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ

फिर जब उन को ज़लज़ले ने पकड़ लिया, तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया के ऐ मेरे रब! अगर तू चाहता

اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

तो इन्हें भी हलाक करता इस से पेहले और मुझे भी। क्या तू हमें हलाक करता है उस हरकत की वजह से जो हम

السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِىَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ

में से बेवकूफों ने की है? ये तो सिर्फ तेरा इमतिहान है। इस के ज़रिए तू गुमराह करता है

تَشَآءُ وَتَهْدِىْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا

जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है। तू हमारा कारसाज़ है, तू हमारी मग़फिरत कर दे

وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾ وَاكْتُبْ لَنَا

और हम पर रहम फरमा, तू बेहतरीन मग़फिरत करने वाला है। और हमारे लिए

فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ

इस दुन्या में भलाई लिख दे और आखिरत में भी, यक़ीनन हम ने

اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ

आप की तरफ रूजूअ किया। अल्लाह ने फरमाया के अपना अज़ाब मैं उसे पहोंचाऊँगा जिसे मैं चाहूंगा।

وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ

और मेरी रहमत हर चीज़ पर वसीअ है। अनक़रीब मैं उसे लिखूँगा उन लोगों के लिए

يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا

जो डरते हैं और ज़कात देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान

يُؤْمِنُوْنَ ۚ﴿١٥٦﴾ اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ

रखते हैं। वो लोग जो इस रसूल नबीए उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का इत्तिबा करते

الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ

हैं जिसे वो अपने पास तौरात और इन्जील में लिखा

فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ۫ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ

हुवा पाते हैं, जो उन्हें नेक कामों का हुक्म देते हैं और उन्हें बुरे कामों से

عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ

रोकते हैं और उन के लिए पाकीज़ा चीज़ें हलाल करते हैं और उन के लिए बुरी चीज़ें

الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ

हराम करते हैं और उन से उन के भारी बोझ को हटाते हैं (जो उन पर लादे गए थे) और वो तौक़ जो

عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ

उन के ऊपर थे। फिर वो लोग जो नबीए उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर ईमान लाए और जिन्हों ने उन की हिमायत की

وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ

और उन की नुसरत की और उस नूर के पीछे चले जो उन के साथ उतारा गया, यही लोग फलाह

الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾ قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ ع ١٩

पाने वाले हैं। आप फरमा दीजिए ए इन्सानो! यक़ीनन मैं तुम सब की तरफ अल्लाह

اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا ۨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ

का भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ, उस अल्लाह का जिस के लिए आसमानों और ज़मीन की सलतनत है।

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَ يُمِيْتُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ

जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दगी और मौत देता है। फिर तुम ईमान लाओ अल्लाह पर

وَ رَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ

और उस के रसूल नबीए उम्मी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और उस के कलिमात पर

وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٨﴾ وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى

और तुम उसी का इत्तिबा करो ताके तुम हिदायत पाओ। और मूसा (अलैहिस्सलाम) की क़ौम में से एक

اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٩﴾ وَقَطَّعْنٰهُمُ

जमाअत थी जो हक़ की रहनुमाई करती थी और उसी के साथ इन्साफ करती थी। और हम

اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى

ने उन को बारा क़बीले बनाया था। और हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) की तरफ वही की

اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ

जब के मूसा (अलैहिस्सलाम) से उन की क़ौम ने पानी मांगा, (वही की) के आप अपना असा पथ्थर पर मारिए।

فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ

फिर उस में से बारा चश्मे फूट पड़े। यक़ीनन सब लोगों ने

كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ

अपने पीने की जगह को मालूम कर लिया। और हम ने उन पर बादलों का साया किया

وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ

और हम ने उन पर मन्न और सलवा उतारा। के तुम खाओ उन उम्दा चीज़ों में से जो हम ने

مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

तुम्हें रोज़ी के तौर पर दीं। और उन्हों ने हम पर ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन वो खुद अपनी जानों पर

يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ

ज़ुल्म करते थे। और जब उन से कहा गया के रहो इस बस्ती में

وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ

और इस में से खाओ जहां तुम चाहो और तुम कहो ‘‘حِطَّةٌ’’ और तुम दरवाज़े से सजदा करते हुए

سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾

दाखिल हो जाओ, हम तुम्हारे लिए तुम्हारी खताएं बख्श देंगे। अनक़रीब हम नेकी करने वालों को मज़ीद देंगे।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ

फिर उन में से ज़ालिमों ने बात को बदल दिया उस के अलावा से जो उन से कही

لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

गई थी, इस लिए हम ने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इस वजह से के वो

يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾ وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ ع

ज़ालिम थे। और आप उन से सवाल कीजिए उस बस्ती के मुतअल्लिक़ जो समन्दर

حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ وقف لازم

के किनारे पर थी। जब वो सनीचर के बारे में ज़्यादती करते थे

اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّ يَوْمَ

इस लिए के उन के पास उन की मछलियाँ आती थीं सनीचर के दिन पानी पर तैरती हुई और जिस दिन

لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛ كَذٰلِكَ ۛ نَبْلُوْهُمْ معانقة

सनीचर नहीं होता था तो मछलियाँ उन के पास नहीं आती थीं। इसी तरह हम उन को आज़माते थे

بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾ وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ النصف

इस वजह से के वो फासिक़ थे। और जब उन में से एक जमाअत ने कहा के

لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ

तुम क्यूं नसीहत करते हो ऐसी क़ौम को जिन को अल्लाह हलाक करने वाले हैं या उन को सख्त अज़ाब देने वाले हैं?

عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَ لَعَلَّهُمْ

उन्हों ने कहा के (हम नसीहत करते हैं) तुम्हारे रब की तरफ उज़्र पेश करने के लिए और इस लिए के

يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ

शायद वो डरें। फिर जब उन्हों ने भुला दिया उस को जिस के ज़रिए उन को नसीहत की गई थी तो हम ने नजात दी

يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

उन को जो बुराई से रोकते थे और हम ने पकड़ लिया उन को जो ज़ालिम थे

بِعَذَابٍۭ بَـِٔيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾

सख्त अज़ाब में इस वजह से के वो नाफरमान थे।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً

फिर जब उन्हों ने सरकशी की उस से जिस से उन्हें मना किया गया था, तो हम ने उन से कहा के तुम ज़लील

خٰسِـِٕيْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ

बन्दर बन जाओ। और जब आप के रब ने ऐलान किया के वो उन पर क़यामत के

اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ؕ

दिन तक ज़रूर भेजता रहेगा ऐसे शख्स को जो उन्हें बदतरीन सज़ा से तकलीफ दे।

اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾

यक़ीनन तेरा रब अलबत्ता जल्द सज़ा देने वाला है। और यक़ीनन वो बख्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ

और हम ने उन्हें ज़मीन में अलग अलग उम्मतें बनाया। उन में से कुछ नेक हैं

وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ

और उन में से कुछ उस से कमतर हैं। और हम ने उन्हें आज़माया नेअमतों और निक़मतों (अज़ाब) के ज़रिए

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ

शायद वो बाज़ आएं। फिर उन के बाद नाखलफ आए

وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى

जो किताब के वारिस हुए जो इस ज़लील दुन्या का सामान लेते थे

وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ

और केहते थे के अनक़रीब हमारी तो मग़फिरत हो जाएगी। और अगर उन के पास उसी जैसा सामान आता

يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ

तो उस को भी ले लेते। क्या उन से किताब में अहद नहीं लिया गया था

اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ

के वो अल्लाह पर सिवाए हक़ के नहीं कहेंगे और उन्हों ने पढ़ लिया था उसे जो उस किताब में है।

وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ

और आखिरत वाला घर बेहतर है उन के लिए जो मुत्तक़ी हैं।

اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا

क्या फिर तुम अक़्ल नहीं रखते? और वो लोग जो किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं और नमाज़ क़ाइम

الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾ وَاِذْ

करते हैं। यक़ीनन हम इस्लाह करने वालों का अज्र ज़ायेअ नहीं करेंगे। और जब

نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا اَنَّهٗ

हम ने उन के ऊपर पहाड़ को उठाया गोया के वो सायबान है और उन्हों ने समझा के वो

وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا

उन पर गिरने वाला है। (कहा के) मज़बूती से पकड़ो उसे जो हम ने तुम्हें दिया है और याद करो

مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۱﴾ وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ ع ۲۱

उस को जो उस में है ताके तुम मुत्तक़ी बनो। और जब के तुम्हारे रब ने

مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ

बनू आदम की ज़ुर्रीयत को उन की पुश्तों से निकाल कर अहद लिया और उन्हें अपनी जानों

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۚۛ شَهِدْنَا ۚۛ معانقہ ۲ عند المتاخرین ۱۲

के खिलाफ गवाह बनाया के क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? उन्हों ने कहा क्यूं नहीं! हम गवाही देते हैं।

اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿۱۷۲﴾

(ये इस लिए किया) के कहीं तुम क़यामत के दिन यूँ कहो के हम तो इस से बेखबर (ग़ाफिल) थे।

اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَاۗؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا

या तुम कहीं यूँ कहो के हमारे बाप दादा ने इस से पेहले शिर्क किया था और हम

ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

तो उन के बाद आने वाली औलाद थे। क्या फिर आप हमें हलाक करते हैं उस हरकत की वजह से जो

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۱۷۳﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ

बातिलपरस्तों ने की? और इसी तरह आयात को हम तफसील से बयान करते हैं शायद के वो

يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۷۴﴾ وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ

बाज़ आएं। और आप उन के सामने उस शख्स का क़िस्सा तिलावत कीजिए जिसे हम ने अपनी आयतें

اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ

दी थीं, फिर वो उन से सालिम निकल गया और शैतान उस के पीछे पड़ा, फिर वो

مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿۱۷۵﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ

गुमराहों में से हो गया। और अगर हम चाहते तो उसे उन आयात की वजह से ऊपर उठाते, लेकिन वो

اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ

हमेशा नीचे ज़मीन की तरफ गया और अपनी ख्वाहिश के पीछे चलता रहा। तो उस का हाल कुत्ते के हाल

الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ

की तरह है के अगर तुम उस पर बोझ लादो तब भी हांपेगा या उस को छोड़ दो तब भी वो

يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ

हांपेगा। ये उस क़ौम का हाल है जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया।

فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾ سَآءَ

तो आप ये क़िस्से बयान कीजिए ताके वो सोचें। बुरी

مَثَلَاۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ اَنْفُسَهُمْ

मिसाल है उस क़ौम की जिस ने हमारी आयतों को झुठलाया और जो अपनी

كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ

जानों पर ज़ुल्म करते थे। जिस को अल्लाह हिदायत दे वो हिदायतयाफ्ता है।

وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۷۸﴾ وَلَقَدْ

और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो वही लोग खसारा उठाने वाले हैं। और यक़ीनन

ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖۚ

हम ने जहन्नम के लिए बहोत से जिन्नात और इन्सानों को पैदा किया।

لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ

उन के पास दिल हैं जिस से वो समझते नहीं। और उन के पास आँखें तो हैं (लेकिन)

لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ

उन से वो देखते नहीं। और उन के पास कान तो हैं (लेकिन) उन से वो सुनते नहीं।

اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ

ये चौपाओं की तरह हैं, बल्के उन से भी ज़्यादा गुमराह हैं। यही लोग

الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ

ग़ाफिल हैं। और अल्लाह के लिए अच्छे अच्छे नाम हैं, तो अल्लाह को उन नामों के ज़रिए

بِهَا ۪ وَ ذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْۤ اَسْمَآئِهٖ ؕ

पुकारो। और छोड़ दो उन लोगों को जो अल्लाह के नामों में टेढ़ा रास्ता इखतियार करते हैं।

سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ

अनक़रीब उन्हें सज़ा दी जाएगी उस हरकत की जो वो कर रहे हैं। और हमारी मखलूक़ में से

اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾

एक जमाअत है जो हक़ की रहनुमाई करती है और उसी के ज़रिए इन्साफ करती है।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ

और वो लोग जिन्हों ने हमारी आयतों को झुठलाया अनक़रीब हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता पकड़ेंगे

مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾ وَ اُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ

इस तरीक़े से के उन्हें पता न चले। और मैं उन को मोहलत दूँगा। यक़ीनन मेरी तदबीर

مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا سكتة مَا بِصَاحِبِهِمْ

मज़बूत है। क्या उन्हों ने सोचा नहीं के उन के नबी को जुनून

مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا

नहीं है? ये तो साफ साफ डराने वाले हैं। क्या उन्हों ने देखा नहीं

فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ

आसमानों और ज़मीन की सलतनत में और उन चीज़ों में जो अल्लाह ने पैदा

مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰۤى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ

कीं, और (न देखा) ये के हो सकता है के उन की आखिरी मुद्दत क़रीब आ चुकी हो

فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾ مَنْ يُّضْلِلِ

फिर उस के बाद किस चीज़ पर वो ईमान लाएंगे? जिस को अल्लाह गुमराह

اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ؕ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ

कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। और अल्लाह उन्हें उन की सरकशी में सरगरदाँ

يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ

छोड़ देते हैं। वो आप से सवाल करते हैं क़यामत के मुतअल्लिक़ के उस के वाकेअ होने का वक्त

مُرْسٰىهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا

कब है? आप फरमा दीजिए के उस का इल्म तो सिर्फ मेरे रब के पास है। उसे उस के वक्त पर

لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ؔۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

ज़ाहिर नहीं करेगा मगर वही। क़यामत बड़ी भारी चीज़ है आसमानों और ज़मीन में।

لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ

वो तुम्हारे पास नहीं आएगी मगर अचानक। वो आप से सवाल करते हैं गोया आप क़यामत के बारे में जानते हैं।

قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

आप फरमा दीजिए के उस का इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है, लेकिन लोगों में से अक्सर जानते

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٨٧ قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا

नहीं। आप फरमा दीजिए के मैं अपनी जान के लिए नफा और ज़रर का मालिक नहीं हूँ

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ

मगर वही जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब जानता होता तो मैं खैर ज़्यादा

مِنَ الْخَيْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ

तलब कर लेता और मुझे कोई तकलीफ न पहोंचती। मैं तो सिर्फ डराने वाला

ع ٢٤ وَّ بَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝١٨٨ ع هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ

और बशारत देने वाला हूँ ऐसी क़ौम के लिए जो ईमान लाती है। वही अल्लाह है जिस ने तुम्हें पैदा किया है

مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ

एक जान से (आदम अलैहिस्सलाम से) और उसी से उन की बीवी को बनाया ताके वो उन की तरफ सुकून

اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ

हासिल करे। फिर जब (आदम अलैहिस्सलाम) ने उन से सोहबत की तो वो हामिला हो गईं हलके हमल से, फिर वो उस को ले

بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا

कर चलती रहीं। फिर जब वो बोझल हुईं तो दोनों ने अल्लाह से अपने रब से दुआ की के अगर तू हमें नेक

صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝١٨٩ فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا

औलाद देगा तो हम शुक्र अदा करने वालों में से बन जाएंगे। फिर जब अल्लाह ने उन्हें सालेह औलाद दी

صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى

तो वो अल्लाह के लिए शरीक ठेहराने लगे उस में जो अल्लाह ने उन्हें दिया। तो अल्लाह बरतर है उन चीज़ों से जिस

اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝١٩٠ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ

को वो शरीक ठेहरा रहे हैं। क्या वो शरीक ठेहराते हैं उन चीज़ों को जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकती,

شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ۝١٩١ ۖ وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا

बल्के वो खुद ही मखलूक़ हैं। और वो उन की मदद की ताक़त नहीं रखते

وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝١٩٢ وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى

बल्के वो खुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते। और अगर आप उन्हें बुलाएं हिदायत की

الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ
तरफ तो वो आप के पीछे नहीं चलेंगे। तुम पर बराबर है चाहे तुम उन को पुकारो

اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ۝۱۹۳ اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
या तुम चुप रहो। यक़ीनन जिन को तुम पुकारते हो अल्लाह के

اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ
अलावा वो तुम्हारे जैसे बन्दे हैं, फिर तुम उन्हें पुकारो, तो उन्हें चाहिए के वो तुम्हें जवाब दें

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝۱۹۴ اَلَهُمْ اَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ
अगर तुम सच्चे हो। क्या उन के पैर हैं जिन से वो चलते

بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اَعْيُنٌ
हैं? या उन के हाथ हैं जिन से वो पकड़ते हैं? या उन की आँखें हैं जिन से

يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ز اَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ قُلِ
वो देखते हैं? या उन के कान हैं जिन से वो सुन सकते हैं? आप फरमा दीजिए के

ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝۱۹۵
तुम अपने शुरका को पुकारो, फिर तुम मेरे खिलाफ मक्र करो, फिर मुझे मोहलत भी मत दो।

اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ۚۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى
यक़ीनन मेरा कारसाज़ वो अल्लाह है जिस ने ये किताब उतारी। और वो नेक लोगों का

الصّٰلِحِيْنَ ۝۱۹۶ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ
वाली है। और जिन को तुम अल्लाह के अलावा पुकारते हो

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ۝۱۹۷
वो तुम्हारी नुसरत की ताक़त नहीं रखते और न ही वो अपने आप की मदद कर सकते हैं।

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ؕ وَتَرٰىهُمْ
और अगर आप उन्हें बुलाएं हिदायत की तरफ तो वो सुनते भी नहीं। और आप उन्हें देखोगे

يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ۝۱۹۸ خُذِ الْعَفْوَ
के वो आप की तरफ देख रहे हैं हालांके वो देख नहीं पाते। आप मुआफी को लीजिए

وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ۝۱۹۹ وَاِمَّا
और नेकी का हुक्म दीजिए और जाहिलों से ऐराज़ कीजिए। और अगर

يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ

आप को शैतान की तरफ से कोई वसवसा आए तो अल्लाह की पनाह तलब कीजिए। यक़ीनन वो

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝۲۰۰ اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ

सुनने वाला, इल्म वाला है। यक़ीनन वो जो मुत्तक़ी हैं जब उन्हें शैतान की तरफ से

مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝۲۰۱ۚ

कोई वसवसा पहोंचता है, तो वो ज़िक्र (याद) में लग जाते हैं, फिर उसी वक्त उन्हें बसीरत मिल जाती है।

وَاِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِى الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُوْنَ ۝۲۰۲

और उन के भाई उन्हें खींच रहे हैं सरकशी में, फिर वो कोताही नहीं करते।

وَاِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰيَةٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ؕ

और जब उन के पास आप का कोई मोअजिज़ा नहीं लाते तो केहते हैं के तुम कोई मोअजिज़ा चुन कर क्यूं नहीं लाए?

قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ مِنْ رَّبِّيْ ۚ هٰذَا

आप फरमा दीजिए के मैं तो सिर्फ उस के पीछे चलता हूँ जो मेरी तरफ मेरे रब की तरफ से वही की जाती है। ये

بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ

तुम्हारे रब की तरफ से बसीरतें हैं और हिदायत और रहमत है ऐसी क़ौम के लिए जो

يُّؤْمِنُوْنَ ۝۲۰۳ وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ

ईमान लाती है। और जब कुरआन पढ़ा जाए तो सब उस की तरफ कान लगाओ

وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝۲۰۴ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ

और खामोशी इखतियार करो ताके तुम पर रहम किया जाए। और आप अपने रब को याद कीजिए

فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّ دُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ

अपने दिल में आजिज़ी के साथ और डरते डरते और आवाज़ बुलन्द किए बग़ैर

بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝۲۰۵

सुबह व शाम और आप ग़ाफिलों में से न बनें।

اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ

यक़ीनन वो फरिश्ते जो तेरे तब के पास हैं वो अल्लाह की इबादत से तकब्बुर

۲۴ ع ۱۴
عَنْ عِبَادَتِهٖ وَ يُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۝۲۰۶ السجدة ع

नहीं करते, बल्के वो उस की तस्बीह करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं।

ركوعاتها ١٠ (٨) سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ (٨٨) اٰياتها ٧٥

और १० रूकूअ हैं सूरह अन्फाल मदीना में नाज़िल हुई उस में ७५ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ

ये आप से सवाल करते हैं अमवाले ग़नीमत के मुतअल्लिक़। आप फरमा दीजिए के अमवाले ग़नीमत अल्लाह और रसूल के लिए हैं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

तो अल्लाह से डरो और आपस के तअल्लुक़ात उस्तुवार कर लो। और इताअत करो अल्लाह की

وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ

और उस के रसूल की अगर तुम ईमान वाले हो। ईमान वाले सिर्फ वही

الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ

हैं के जब अल्लाह को याद किया जाए तो उन के दिल हिल जाते हैं और जब उन पर अल्लाह की आयतें

عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ

तिलावत की जाती हैं तो ये आयतें उन का ईमान बढ़ा देती हैं और वो अपने रब पर तवक्कुल

يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٢ۚۖ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ

करते हैं। जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और उन चीज़ों में से जो हम ने खाने के लिए उन्हें दीं

يُنْفِقُوْنَ ۝٣ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ

खर्च करते हैं। यही हक़ीक़ी मोमिन हैं। उन के लिए

دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤ۚ

उन के रब के पास दरजात हैं और मग़फिरत है और इज़्ज़त वाली रोज़ी है।

كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَاِنَّ فَرِيْقًا

जैसा के आप को आप के रब ने आप के घर से हक़ की खातिर निकाला। और यक़ीनन ईमान वालों की एक

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝٥ۙ يُجَادِلُوْنَكَ

जमाअत अलबत्ता नापसन्द कर रही थी। वो आप से झगड़ रहे थे

فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ

हक़ के बारे में इस के बाद के वो वाज़ेह हो चुका, गोया के वो हांके जा रहे थे मौत की तरफ

وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۞٦ وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى
इस हाल में के वो उसे देख रहे हों। और जब तुम से अल्लाह वादा कर रहा था दो जमाअतों में से एक का
الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ
के यक़ीनन एक तुम्हारे लिए है और तुम चाह रहे थे के (खतरे के) कांटे वाला न हो
الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّحِقَّ
वो जमाअत तुम्हारे लिए हो जाए और अल्लाह चाहते थे के हक़ को अपने कलिमात के ज़रिए
الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَ يَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۞٧
हक़ साबित करे और काफिरों की जड़ काट दे।
لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۞٨
ताके वो हक़ को हक़ साबित करे और बातिल को बातिल बनाए अगर्चे मुजरिमीन नापसन्द करें।
اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ
जब के तुम अपने रब से मदद तलब कर रहे थे, तो उस ने तुम्हारी दुआ क़बूल की
اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۞٩
के मैं लगातार आने वाले एक हज़ार फरिश्तों के ज़रिए तुम्हारी मदद करूंगा।
وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ج
और अल्लाह ने उस को नहीं बनाया मगर बशारत और इस लिए ताके उस से तुम्हारे दिल मुतमइन हों।
وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ
और नुसरत नहीं है मगर अल्लाह ही की तरफ से। यक़ीनन अल्लाह ज़बर्दस्त है,
ع١ ١٠ ١٥ حَكِيْمٌ ۞١٠ اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ
हिक्मत वाला है। जब अल्लाह तुम पर नींद डाल रहा था अपनी तरफ से अमन के लिए
وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ
और तुम पर आसमान से पानी बरसा रहा था ताके उस के ज़रिए तुम्हें पाक कर दे
وَ يُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ
और तुम से शैतान की गन्दगी को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को
عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ۞١١ اِذْ يُوْحِيْ
मज़बूत कर दे और उस से क़दमों को जमा दे। जब के तुम्हारा

رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ اَنِّیْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِیْنَ

रब फरिश्तों को हुक्म दे रहा था के मैं तुम्हारे साथ हूँ, तो तुम ईमान वालों को जमाए

اٰمَنُوْا ؕ سَاُلْقِیْ فِیْ قُلُوْبِ الَّذِیْنَ كَفَرُوا

रखो। अनक़रीब मैं काफिरों के दिलों में रौब

الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا

डाल दूँगा, तो तुम मारो गर्दनों के ऊपर और उन

مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ؕ ﴿١٢﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ

की उँगलियों के हर जोड़ पर ज़र्ब लगाओ। ये इस वजह से के उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल की

وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ یُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

मुखालफत की। और जो भी अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफत करेगा

فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِیْدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ

तो यक़ीनन अल्लाह सख्त सज़ा देने वाला है। उस को तुम चखो

وَاَنَّ لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ

और ये के काफिरों के लिए आग का अज़ाब भी है। ऐ ईमान

اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِیْتُمُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا

वालो! जब तुम कुफ्फार की जमईय्यत के मुक़ाबिल हो जाओ

فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۚ ﴿١٥﴾ وَمَنْ یُّوَلِّهِمْ یَوْمَىِٕذٍ

तो तुम उन की तरफ पीठ मत करो (मत भागो)। और जो उन से उस दिन

دُبُرَهٗۤ اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَیِّزًا اِلٰى فِئَةٍ

भागे मगर वो जो लड़ाई के लिए किनारे पर आने वाला हो या लशकर की तरफ कूव्वत हासिल करने वाला हो,

فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ

तो यक़ीनन वो अल्लाह के गज़ब को ले कर लौटा और उस का ठिकाना जहन्नम है।

وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿١٦﴾ فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ

और वो बुरी जगह है। फिर तुम ने उन को क़त्ल नहीं किया

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪ وَمَا رَمَیْتَ اِذْ رَمَیْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

लेकिन अल्लाह ने उन को क़त्ल किया। और आप ने मिट्टी नहीं फैंकी जब के आप ने फैंकी थी लेकिन अल्लाह ही ने फैंकी।

رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِىَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ
और इस लिए ताके अल्लाह अपनी तरफ से आज़माए ईमान वालों को अच्छी तरह आज़माना।
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝١٧ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ
यक़ीनन अल्लाह सुनने वाले, इल्म वाले हैं। ये इस वजह से के अल्लाह काफिरों के
كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٨ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ
मक्र को कमज़ोर करने वाले हैं। अगर तुम फतह तलब करते हो तो यक़ीनन तुम्हारे पास
الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا
फतह आ पहोंची। और अगर तुम बाज़ आ जाओ तो ये तुम्हारे लिए बेहतर है। और अगर तुम दोबारा ऐसा करोगे
نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِىَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا
तो हम भी दोबारा ऐसा करेंगे। और हरगिज़ तुम्हारे काम नहीं आएगी तुम्हारी जमईय्यत कुछ भी
وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٩ يٰۤاَيُّهَا
अगर्चे वो कितनी ही ज़्यादा क्यूं न हो। और ये इस लिए के अल्लाह ईमान वालों के साथ हैं। ऐ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا
ईमान वालो! तुम अल्लाह और उस के रसूल की इताअत करो और उस से मुंह मत
عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ۝٢٠ وَلَا تَكُوْنُوْا
मोड़ो इस हाल में के तुम सुनते भी हो। और तुम उन लोगों की तरह मत बनो
كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝٢١
जिन्हों ने कहा के ‘‘سَمِعْنَا’’, हालांके वो सुनते नहीं।
اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ
यक़ीनन बदतरीन चौपाए अल्लाह के नज़दीक वो बेहरे और गूंगे हैं जो
لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٢٢ وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ
समझते भी नहीं। और अगर अल्लाह उन में कोई भलाई जानता तो ज़रूर उन्हें सुनाता।
وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢٣ يٰۤاَيُّهَا
और अगर उन्हें अल्लाह सुनाता तो वो मुंह फेरते ऐराज़ करते हुए। ऐ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ
ईमान वालो! तुम अल्लाह और रसूल की बात मानो जब तुम्हें वो पुकारें

لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ
ऐसी चीज़ की तरफ जो तुम्हें जिन्दगी देती है। और तुम जान लो के अल्लाह हाइल हो जाते हैं

الْمَرْءِ وَ قَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاتَّقُوْا
इन्सान और उस के दिल के दरमियान और ये के तुम उस की तरफ इकट्ठे किए जाओगे। और तुम डरो

فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ
उस फितने (आज़माइश) से जो सिर्फ तुम में से ज़ालिमों को नहीं पहोंचेगा।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَاذْكُرُوْٓا
और जान लो के अल्लाह सख्त सज़ा देने वाले हैं। और तुम याद करो

اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ
जब के तुम थोड़े थे, ज़मीन में कमज़ोर किए जा रहे थे, तुम डरते थे के

اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَ اَيَّدَكُمْ
तुम्हें लोग उचक लेंगे, फिर अल्लाह ने तुम्हें ठिकाना दिया और तुम्हारी ताईद की

بِنَصْرِهٖ وَ رَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾
अपनी नुसरत के ज़रिए और तुम्हें उम्दा चीज़ें खाने को दीं ताके तुम शुक्र अदा करो।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ
ऐ ईमान वालो! खयानत मत करो अल्लाह और रसूल से

وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاعْلَمُوْٓا
और तुम अपनी अमानतों में खयानत मत करो इस हाल में के तुम जानते हो। और जान लो के

اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ
तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो सिर्फ आज़माइश हैं। और ये के अल्लाह के पास

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا ع
भारी अज्र है। ऐ ईमान वालो! अगर तुम अल्लाह से डरोगे

اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّ يُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ
तो वो तुम्हारे लिए हक़ व बातिल के दरमियान फैसला करने वाली कुव्वत अता कर देगा और तुम से तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर देगा

وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾ وَاِذْ
और तुम्हारी मग़फिरत करेगा। और अल्लाह भारी फज़्ल वाले हैं। और जब के

يَمۡكُرُ بِكَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا لِيُثۡبِتُوۡكَ اَوۡ يَقۡتُلُوۡكَ
आप के साथ कुफ्फार मक्र कर रहे थे ताके वो आप को क़ैद कर दें या आप को क़त्ल कर दे
اَوۡ يُخۡرِجُوۡكَ ‌ؕ وَيَمۡكُرُوۡنَ وَ يَمۡكُرُ اللّٰهُ‌ ؕ وَاللّٰهُ خَيۡرُ
या आप को वतन से निकाल दें। और वो मक्र कर रहे थे और अल्लाह भी तदबीर कर रहे थे। और अल्लाह बेहतरीन
الۡمٰكِرِيۡنَ ۝۳۰ وَاِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِمۡ اٰيٰتُنَا قَالُوۡا قَدۡ
तदबीर करने वाले हैं। और जब उन पर हमरी आयतें तिलावत की जाती हैं तो केहते हैं बस
سَمِعۡنَا لَوۡ نَشَآءُ لَقُلۡنَا مِثۡلَ هٰذَآ ۙ اِنۡ هٰذَآ
हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो यक़ीनन हम भी उस जैसा कलाम केह लें। ये तो सिर्फ
اِلَّاۤ اَسَاطِيۡرُ الۡاَوَّلِيۡنَ ۝۳۱ وَاِذۡ قَالُوا اللّٰهُمَّ
पेहले लोगों की गढ़ी हुई कहानियाँ हैं। और जब के उन्हों ने कहा ऐ अल्लाह!
اِنۡ كَانَ هٰذَا هُوَ الۡحَـقَّ مِنۡ عِنۡدِكَ فَاَمۡطِرۡ عَلَيۡنَا
अगर ये तेरी तरफ से हक़ है, तो तू हम पर
حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ اَوِ ائۡتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ۝۳۲
आसमान से पथ्थर बरसा या हम पर दर्दनाक अज़ाब ले आ।
وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمۡ وَاَنۡتَ فِيۡهِمۡ‌ ؕ وَمَا كَانَ
हालांके अल्लाह उन्हें अज़ाब नहीं देंगे इस हाल में के आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उन में हैं। और अल्लाह उन्हें
اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمۡ وَهُمۡ يَسۡتَغۡفِرُوۡنَ ۝۳۳ وَمَا لَهُمۡ
अज़ाब नहीं देंगे इस हाल में के वो इस्तिग़फार कर रहे हों। और उन को क्या हुवा
اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمۡ يَصُدُّوۡنَ عَنِ الۡمَسۡجِدِ
के अल्लाह उन को अज़ाब न दे इस हाल में के वो मस्जिदे हराम से रोकते
الۡحَـرَامِ وَمَا كَانُوۡۤا اَوۡلِيَآءَهٗ‌ ؕ اِنۡ اَوۡلِيَآؤُهٗۤ
हैं, हालांके वो उस के हक़दार भी नहीं हैं। उस के हक़दार तो
اِلَّا الۡمُتَّقُوۡنَ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝۳۴ وَمَا كَانَ
सिर्फ मुत्तक़ी लोग हैं, लेकिन उन में से अक्सर जानते नहीं। और उन की
صَلَاتُهُمۡ عِنۡدَ الۡبَيۡتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصۡدِيَةً‌ ؕ
नमाज़ बैतुल्लाह के पास सिवाए सीटियाँ बजाने और तालियों के नहीं होती।

فَذُوۡقُوا الۡعَذَابَ بِمَا كُنۡتُمۡ تَكۡفُرُوۡنَ ﴿۳۵﴾
तो अज़ाब चखो इस वजह से के तुम कुफ्र करते थे।

اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَهُمۡ لِيَصُدُّوۡا
यक़ीनन वो लोग जो काफिर हैं वो अपने माल खर्च करते हैं ताके वो

عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِؕ فَسَيُنۡفِقُوۡنَهَا ثُمَّ تَكُوۡنُ
अल्लाह के रास्ते से रोकें। फिर वो अनक़रीब उसे खर्च करेंगे, फिर वो

عَلَيۡهِمۡ حَسۡرَةً ثُمَّ يُغۡلَبُوۡنَ ؕ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا
उन पर हसरत का बाइस बनेगा, फिर वो मग़लूब होंगे। और जो काफिर हैं

اِلٰى جَهَنَّمَ يُحۡشَرُوۡنَ ﴿۳۶﴾ۙ لِيَمِيۡزَ اللّٰهُ الۡخَبِيۡثَ
वो जहन्नम की तरफ इकट्ठे किए जाएंगे। ताके अल्लाह बुरे को अच्छे से

مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجۡعَلَ الۡخَبِيۡثَ بَعۡضَهٗ عَلٰى بَعۡضٍ فَيَرۡكُمَهٗ
अलग करे और अल्लाह बुरे को एक दूसरे के ऊपर कर दे, फिर उस को इकट्ठा तेह बतेह

جَمِيۡعًا فَيَجۡعَلَهٗ فِىۡ جَهَنَّمَؕ اُولٰۤـئِكَ هُمُ
कर दे, फिर उस को जहन्नम में डाल दे। यही लोग खसारा

الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۳۷﴾ قُلۡ لِّلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اِنۡ يَّنۡتَهُوۡا يُغۡفَرۡ ٤ ع ٥ ١٨
उठाने वाले हैं। आप काफिरों से फरमा दीजिए के अगर वो बाज़ आ जाएंगे तो उन के लिए मग़फिरत कर दी

لَهُمۡ مَّا قَدۡ سَلَفَۚ وَاِنۡ يَّعُوۡدُوۡا فَقَدۡ مَضَتۡ
जाएगी उन गुनाहों की जो पेहले हो चुके। और अगर वो दोबारा ऐसा करेंगे तो पेहले लोगों का

سُنَّتُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۳۸﴾ وَقَاتِلُوۡهُمۡ حَتّٰى لَا تَكُوۡنَ فِتۡنَةٌ
तरीक़ा गुज़र चुका है। और तुम उन से क़िताल करो यहां तक के कुफ्र का फितना बाक़ी न रहे

وَّيَكُوۡنَ الدِّيۡنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِۚ فَاِنِ انۡتَهَوۡا فَاِنَّ اللّٰهَ
और दीन सारा का सारा अल्लाह ही के लिए हो जाए। फिर अगर वो बाज़ आ जाएं तो यक़ीनन अल्लाह

بِمَا يَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ﴿۳۹﴾ وَاِنۡ تَوَلَّوۡا فَاعۡلَمُوۡۤا
उन के आमाल को देख रहे हैं। और अगर वो ऐराज़ करें तो तुम जान लो के

اَنَّ اللّٰهَ مَوۡلٰٮكُمۡؕ نِعۡمَ الۡمَوۡلٰى وَنِعۡمَ النَّصِيۡرُ ﴿۴۰﴾
अल्लाह तुम्हारा मौला है, बेहतरीन मौला और बेहतरीन मदद करने वाला है।